संक्षिप्त नमूना

स्वस्थ अगुवे के विकास के सिद्धान्तों का सारांश

ConneXions नमूना छः समूहों में 18 मुख्य सिद्धान्तों का इस्तेमाल करता है।

प्रभावशाली अगुवों को विकास:

1. समग्र होगा

कलीसिया को स्वस्थ अगुवों की आवश्यकता है। एक स्वस्थ मसीही अगुवा पाँच क्षेत्रों में अर्थात मसीह, समाज, चरित्र,बुलाहट और सक्षमता में मज़बूत होगा। अत: अगुवे का विकास करने वाली प्रभावशाली प्रक्रिया में पांचों चीजों पर ध्यान केन्द्रित करना शामिल होगा।

2. आत्मिक होगा

अन्ततःपरमेश्वर ही अगुवों की उन्नति या विकास करने वाला है। अत: ConneXions हमेशा कोशिश करता है कि पवित्र आत्मा को अपने तरीके से काम करने की आज़ादी प्राप्त हो। पवित्र आत्मा की योजना पूरी होने के बीच में हमारी योजना कोई बाधा नहीं बननी चाहिए। वरन, परमेश्वर हमें परिवर्तित करने के लिए जीवन से जुड़ी सभी चीज़ों का इस्तेमाल करते हैं,इसलिए ConneXions उभरते हुए अगुवों की (क) उनके बीते जीवन में परमेश्वर के कामों को समझने में,(ख)वर्तमान काल में परमेश्वर के कामों का प्रतिउत्तर देने में(ग) और भविष्य में उसके जीवन व सेवाकाई में परमेश्वर के कार्यों के लिए तैयार रहने में सहायता करता है

अगुवे का विकास प्रार्थना द्वारा संतृप्त होना चाहिए। यीशु मसीह ने उभरते हुए अगुवों के लिए, अगुवों के साथ और उनके ऊपर प्रार्थना की। यीशु ने अपने चेलों पर पिता को प्रगट किया; उन्हाने परमेश्वर को देखा,उसकी आवाज को सुना और उसे छुआ(1यूहन्ना 1:1-3)! एक प्रभावशाली मसीही अगुवे की विशेषता यह है कि वह परमेश्वर को जानता ह और वह मसीह के साथ अपने घनिष्ठ सम्बन्धों के आधार पर जीवन व्यतीत करता और सेवाकाई निभाता है। और नये अगुवों का विकास करने में हमारी प्राथमिक जिम्मेदारी यह है कि वे परमेश्वर को जाने -हमें उन्हें प्रार्थना करना सिखाना चाहिए।

3. रिश्तों से जुड़ा होगा

स्वस्थ अगुवों का निर्माण समाज में रहते हुए होता है। इसलिए, पूरी कलीसिया ने अगुवों का निर्माण करने के लिए सक्रिय रूप में प्रतिभागिता निभाने की जिम्मेदारी लेनी चाहिए। अगर हम एक दूसरे से अगल रहने वाले "फैक्ट्री" के तरीके से निकलकर "एक परिवार" के जैसे रहना शुरू कर देगें तो हमें निम्न बातें दिखाई देगी:

- लचीलापन
- गुणात्मकता
- आत्म-प्रोत्साहन
- समग्र विकास
- प्रतिबन्धित देशों में सुरक्षा
- सही लोगों का प्रशिक्षण प्राप्त किया जाना।
- जीवन भर नियमित तौर पर चलने वाला विकास।
- प्रभावशाली मूल्यांकन।

अगुवे अगुवे को बनाते हैं। शिक्षक और पाठयक्रम अपने आप कभी अगुवे का निर्माण नहीं कर सकते। एक अगुवे में दर्शन, जुनून,साहस और अगुवाई के योजनाबद्ध दृष्टिकोण को स्थानान्तरित करने के लिए एक अगुवे की ज़रूरत होती है। इस कारण हमें किसी ऐसे सिद्ध "मंत्र" की खोज नहीं करनी चाहिए जो "अपने आप"सारे काम कर दे। मंत्रों से अगुवों का निर्माण नहीं होता; अगुवे अगुवों का निर्माण करते हैं। बड़े से बड़ा मंत्र भी एक परिपक्व व योग्य अगुवे के हाथों में एक औज़ार के समान होगा। इसके अलावा, हमें अपेक्षा करनी चाहिए कि हर एक अगुवा औज़ार लेकर अलग ढंग से उसका इस्तेमाल करेगा। परन्तु उस औज़ार या मंत्र को स्वामी नहीं बन जाना चाहिए।

अगुवों का निर्माण करने वाला अगुवा स्वयं प्रतिदिन अगुवाई की दैनिक जिम्मेदारियों में शामिल होना चाहिए। उन्हें व्यवहारिक दुनिया से हटकर कोई दिखावटी शिक्षा नहीं देनी चाहिए। यीशु और पौलुस (प्रेरितों 19:9-11)ने बहुतायत से व्यक्तिगत सेवाकाई निभाई और साथ ही साथ नये नये अगुवों का निर्माण जारी रखा। इन बातों के अभ्यास के कारण ईमानदारी व वास्तविकता बनी रहती है, विश्वसनीयता और समानुभूति मिलती है और प्रभावकारिता में बढ़ौतरी होती है।

एक समय में कुछ ही अगुवों का निर्माण होता है। क्योंकि अगुवा व्यक्तिगत तौर पर अगुवों को तैयार करता है इस कारण एक समय में कुछ ही अगुवों को तैयार करना सम्भव हो पाता है-यदि वह उचित रीति से अगवों को तैयार करना चाहता हो तो। यीशु ने अपनी कलीसिया को संचालित करने के लिए कुछ ही अगुवों को तैयार किया जो भविष्य में सारी दुनिया को बदलने वाले थे। पौलुस और दूसरें अगुवों ने भी इसी तरह से अगुवों को तैयार किया। व्यक्तिगत तौर पर जल्दी से "हजारों अगुवों" को तैयार करने की नीति बाइबल आधारित नहीं है। बाइबल आधारित नमूना कहता है कि : "जो बातें तुमने मुझ से सुनी हैं वह उन विश्वासयोग्य मनुष्यों को सौंप दो जो दूसरों को भी सिखा सकें।" (2तीमु 2:2)। दूसरे शब्दों में ऐसे अगुवों को तैयार करें जो दूसरों को और वे दूसरों को तैयार कर सकें और यह सिलसिला चलता रहे। और थोड़े ही समय में हमारे पास उतने अगुवे होगें जितनों की हमें जरूरत हैं। फर्क केवल इतना सा होगा: वे उत्तम अगुवे होंगे।

हमें सही लोगों को तैयार करना चाहिए। हमारी प्रक्रिया पूरी तरह स कुछ ही लोगों पर केन्द्रित होती है, इस कारण उन लोगों

को सही होना बहुत जरूरी है।

4.प्रायौगिक होगा

अगुवे कामों को करने के द्वारा सीखते हैं। यीशु ने "काम करते हुए" अगुवों को तैयार किया, जहाँ उनके पास सुलझाने के लिए व्यवहारिक समस्याएं होती थी और उन्हें असली नतीजों का सामना करने का अवसर मिलता था। इसलिए हमें कक्षा में निर्देश प्रदान करने के साथ साथ सेवाकाई में व्यवहारिक कामों के द्वारा अनुभव प्राप्त करने का अवसर भी प्रदान करना चाहिए।

परम्परागत तरीके से मसीही अगुवों का निर्माण करने में एक समस्या यह है कि हम उभरते हुए अगुवों को सामान्य जीवन और सेवाकाई के दायरे से बाहर निकालकर उन्हें दिखावटी माहौल (कुछ वर्षों के लिए), या ऐसे स्वरूप में डाल देते हैं जिससे उनका भविष्य में कोई वास्ता नहीं होता और हम उन्हें ऐसी बातें सिखाते हैं जिनका वे अपने जीवन भर कभी इस्तेमाल नहीं करते।

चुनौतिपूर्ण परिस्थितियां उभरते हुए अगुवे पर दबाव बनाती और उन्हें परिपक्व बनाती हैं। ये चुनौतिपूर्ण कार्य उनकी वर्तमान क्षमता ये थोड़ा ऊपर होना बहुत जरूरी है। ये कार्य उनकी सीमा या क्षमता से परे भी न हो अन्यथा वे असफल,निराश होकर हार मान जाएंगे; लेकिन इन चुनौतियों का स्तर नीचा या समान स्थिति में नहीं होना चाहिए। निर्धारित कार्य ने उन पर दबाव जरूरत बनाना चाहिए।

अगुवे आग के द्वारा तैयार किये जाते हैं । जिस प्रकार से लोहा आग में तपाकर मज़बूत बनाया जाता है, जिस प्रकार से सोना आग की भटटी में शुद्ध किया जाता है, जिस प्रकार से कोयला दबाव पड़कर हीरे में परिवर्तित हो जाता है, उसी प्रकार से अगुवे भी आग में तपकर तैयार होते हैं। किसी उभरते हुए अगुवे को कोई निर्धारित जिम्मेदारी या अधिकार देने से पहले उसे तनावपूर्ण या कठिन परिस्थितियों में डालना ज्यादा अच्छा है बजाय इसके कि हम बैठकर उस दिन का इन्तजार करें कि दवाब पड़ने पर असफलताओं के कारण दोनो अगुवे और उनके साथ के सारे लोग नाश हो जाएंगे।

इसलिए ConneXions जानबूझकर, लेकिन सावधानी और जिम्मेदारी के साथ उभरते हुए अगुवों पर उनके दिल पर लगी चोटों को उस स्थिति तक ले जाने के लिए दबाव डालते हैं ताकि वे समस्याएं -सहारा देने वाले और उत्तरदायी समाज के सामने -प्रगट हों और सुलझायी जा सकें।

5.आदेशात्मक होगा

परमेश्वर का वचन नींव व स्वस्थ अगुवों का तैयार करने का माध्यम है। यीश् द्वारा अगुवों को तैयार करने की प्रक्रिया में परमेश्वर का वचन केन्द्र बिन्दु था और यह हमारा भी केन्द्र बिन्दु होना चाहिए। क्योंकि परमेश्वर का वचन उचित रीति से सिखाया जाना बहुत ज़रूरी है:

- परमेश्वर के वचन की शिक्षा और अगुवे के साथ व्यक्तिगत सम्बन्ध होना बहुत जरूरो है। (2 तीमुथीयुस 3:10-17)
- लोगों का शामिल होना बहुत जरूरी है। सिखाने का मतलब यह नहीं है कि आप उसे चीज़ को सीख गये हैं। पढ़ने का अर्थ होता है *आप क्या जानते हैं* लेकिन सीखने का अर्थ है कि *आप क्या करते हैं।* अगर किसी व्यक्ति का व्यवहार नहीं बदल रहा है तो इसका अर्थ है कि उसने कुछ नहीं सीखा है।
- उत्तम शिक्षा में शिक्षक व विद्यार्थी के बीच होने वाले सवाल जवाब शामिल होते हैं, उत्तम शिक्षा वह लम्बा भाषण नहीं जो विद्यार्थी उदासीन मन से चुपचाप सुनता है। भाषण से बहुत कम मात्रा में लोगों को शिक्षा मिलती है। सुनने का अर्थ सीख लेना नहीं है। सीखने के लिए कार्य कलाप या गतिविधियों की आवश्यकता होती है।
- हमें वचन की शिक्षा देनी चाहिए वचन के बारे में शिक्षा नहीं।
- हमारी शिक्षाएं पवित्र आत्मा के द्वारा अभिषिक्त होनी चाहिए।
- हमारी शिक्षाएं उभरते हुए अगुवों के लिए व्यवहारिक,प्रासंगिक और उचित होनी चाहिए।

काम में शामिल होने से बदलाव आता है। उभरते हुए अगुवे को प्रक्रिया में शामिल होना चाहिए। वे केवल उदासीन रीति से ग्रहण करने वाले नहीं हो सकते; लोग कोई बाल्टी नहीं हैं जिन्हें हम केवल सही जानकारियों द्वारा भरत रहें। हमें ऐसी शिक्षाप्रद परिस्थितियों या अभ्यासों को तैयार करना चाहिए जिससे उन्हें अनुभव प्राप्त हो जिससे उनका जीवन परिवर्तित हो और वे ऐसे अगुवे बने जो विचार कर सकते तथा काम कर सकते हैं।

6. सोच विचार करने वाला

सीखने और बढ़ने की जिम्मेदारी उभरते अगुवे और कलीसिया के समुदाय दोनों की ही है। अगुवों का विकास कोई ऐसी चीज़ नहीं है जो आप किसी "में" या किसी "के लिए" कर रहे हैं।

बुनियादी तौर पर देखा जाए तो,अगुवों के निर्माण में बढ़ने के लिए *अवसर मुहैय्या* कराना होता है : अर्थात सीखने, अनुभव करने, जिम्मेदारियां निभाने और सम्बन्ध बनाने, अवलोकन करने तथा दु:ख तकलीफ के अवसर प्रदान करना । ये अवसर अपने आप किसी के अन्दर बढ़ौत्तरी उत्पन्न नहीं करते और न ही इस बात का कोई निश्चय है कि वह व्यक्ति उन परिस्थितियों का फायदा उठायेगा या नहीं, लेकिन अगर हम अवसर प्रदान नहीं करते हैं तो वहां पर बहुत थोड़ी उन्नति होगी।

अगुवों को तैयार करने में समय लगता है। एक परिपक्व व माहिर अगुवे को तैयार करने में पूरा जीवन लग जाता है। अत:अल्पकालीन प्रशिक्षण के दौरान हमारा लक्ष्य सम्पूर्ण परिपक्वता प्राप्त करना नहीं वरन उभरते हुए अगुवों के जीवन में मज़बूत व विस्तृत बुनियाद डालना है। इसके अलावा हमारा लक्ष्य यह भी है कि वह हमेशा सीखने वाला व्यक्ति बने ताकि वह अपने बाकि जीवन में सीखी हुई बातों पर एक मज़बूत भवन का निर्माण कर सके।

लोग अलग अलग तरीकों से बढ़ते हैं और उनकी बुलाहट भी अलग होती है। इसलिए हमें उभरते हुए अगुवों में परिवर्तन लाने के लिए विभिन्न तरीकों का इस्तेमाल करना चाहिए, और उनकी शिक्षाओं से

उनकी बुलाहट पर भी प्रभाव पड़ना चाहिए।

सामूहिक व व्यक्तिगत दोनों स्थितियों में सीखने वाला सन्दर्भ प्रदान किया जाना चाहिए। एक प्रभावशाली अगुवा सामूहिक तौर पर कार्य करने के लिए एक व्यक्ति द्वारा पालन किये जाने वाले अनुशासन को सीख लेता है। इसलिए हमें समूह व एक सदस्य को ध्यान में रखकर अपनी योजनाओं को सन्तुलित तौर पर तैयार करना चाहिए।

प्रभावशाली अगुवे का निर्माण एक जटिल, प्रयोगशाला है। अगुवों का विकास कोई अनुमानित या सफल बिन्दुओं के द्वारा आगे बढ़ने की क्रिया विधि नहों है। अगुवों का विकास एक जटिल व विविध लोगों, सम्बन्धों,प्रभावों,निर्धारित कार्यों, लक्ष्यों, जिम्मेदारियों, कर्तव्यां, सीमाओं, अवसरों, दबावों, सकंट, आशीषां, कष्टों, अस्वीकृती,सफलताओं, गलतियों इत्यादि चीजों की बहुमुखी प्रयोगशाला है....ये सारी बातें मिलकर एक अगुवे का निर्माण करती हैं। अत: ConneXions एक वास्तविक जीवन, जीवनकाल के अनुभवों की आग में डुबकी लगाने जैसा है, जिससे मसीही अगुवाई का दुविधाजनक और बुनियादी तौर पर कठिन स्वभाव , उनके हृदय में लगी चोटें सामने आ जाती हैं जिससे उनका समाधान किया जा सके और इसके द्वारा उभरते हुए अगुवे पर दबाव पड़ता है कि वह सफलता प्राप्त करने के लिए सिर्फ परमेश्वर की ओर दृष्टि करे।

अगुवों का विकास हर दश, हर संस्कृति, हर परिस्थिति और हर समय में अलग नज़र आयेगा; लेकिन ये बाइबल आधारित सिद्धान्त हर जगह प्रभावशाली होगें।

अधिक जानकारी के लिए सम्पर्क करें:

हमारे सम्पूर्ण मॉडल के लिए कृपया देखें: *मैलकम वैब्बर द्वारा लिखित :स्वस्थ अगुवे: आत्मा से निर्मित अगुवाई #2 व अगुवों को तैयार करना : आत्मा से निर्मित अगुवाई #4 A*